वन अनुसंधान संस्थान में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में वन अनुसंधान संस्थान एशिया में एक अग्रणी संस्थान है। इस संस्थान द्वारा वानिकी क्षेत्र में कई तकनीकियों को विकसित किया है, जिनमें सूर्यतापी भट्टी का निर्माण, पर्यावरण हितैषी प्राकृतिक रंग, केंचुआ खाद, काष्ठ, परिष्करण, बांस के उत्पाद, कृषि वानिकी की उन्नत पद्धतिया आदि शामिल है। इसके अलावा खुम्ब की तथा गैनोडर्मा की खेती पर भी अनुसंधान चल रहा है। इन्ही तकनीकियों का प्रचार प्रसार करने के लिए "सतत् प्रबन्धन प्रचलन तथा आजीविका के सुधार के अवसर" विषय पर वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून के सभागार मे दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 03-04 अक्टूबर, 2012 को किया गया। जिसमें उत्तराखण्ड के विभिन्न भागों के ग्राम पंचायतों के सदस्यों, वनों की संयुक्त प्रबन्धन समितियों, गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों तथा किसानों ने भाग लिया। इस कार्यशाला के माध्यम से सभी प्रतिभागियों को संस्थान में चल रह शोध कार्यों तथा संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न तकनीकियों से अवगत कराया गया।

कार्यशाला का शुभारम्भ महामहिम अजीज कुरैशी, राज्यपाल, उत्तराखण्ड के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर डॉ0 वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवम् शिक्षा परिषद् ने बताया कि किस तरह संस्थान तथा आम आदमी के विचारों एवम् सुझावों के माध्यम से संस्थान द्वारा विकसित तकनीकियों का उपयोग समाज में किया जा सकता है जिससे हमारे प्राकृतिक संसाधनों का सतत् प्रबन्धन तथा विकास हो सकें। उन्होनें कहा कि इस कार्य के लिए समाज को आर्थिक मदद की भी आवश्यकता है।

इस अवसर पर डॉ0 सईदा हमीद, माननीय सदस्य योजना आयोग ने पर्यावरण सुरक्षा के लिए उत्तराखण्ड की महिलाओं की सक्रिय भागीदारी की प्रसंशा की। उन्होने बताया कि 12वी योजना के हर सेक्टर में जन सहभागिता के साथ जो शोध कार्य हुए है उनका भी समाज के समावेश सुनिश्चित किया गया है।

कार्यशाला के मुख्य अतिथि माननीय अजीज कुरैशी ने अपने सम्बोधन मे वन अनुसंधान संस्थान मे वनविदो की स्मृति शिला बनाने पर महानिदेशक आई.सी.एफ.आर.ई. का धन्यवाद दिया तथा अनुदान की भी घोषणा की। उन्होने जंगली जड़ी-बूटियो के संरक्षण पर बल दिया तथा कहा कि वन कर्मियों को जंगलो की सुरक्षा अधिक बल प्रयोग के अधिक अधिकार मिलने चाहिए। इस अवसर पर उन्होनें प्राचीनकाल से आधुनिक काल तक मानव तथा जंगल के रिश्ते का जिक्र किया साथ ही खुशी जाहिर की कि वन अनुसंधान संस्थान जंगलों तथा जडी़ बूटियो के संरक्षण व परिवर्धन का कार्य बखूबी से कर रहा है।

संस्थान के निदेशक डॉ0 पी. पी. भोजवैद ने अपने धन्यवाद प्रस्ताव में महामहिम राज्यपाल श्री अजीज कुरैशी, डॉ0 सईदा हमीद माननीय सदस्य योजना आयोग तथा डॉ0 वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक आई.सी.एफ.आर.ई. का कार्यशाला में पधारने के लिए आभार व्यक्त किया तथा श्रीमती जयश्री आरडे, प्रमुख विस्तार प्रभाग, एवं उनके टीम के वैज्ञानिकों व अधिकारियों का भी कार्यशाला को सफल बनाने के लिए धन्यवाद व्यक्त किया। उन्होनें

बताया कि इस संस्थान ने वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में काफी सराहनीय कार्य किया है तथा कड़ी मेहनत से विकसित की गई तकनीकियों को आम जनों तक निशुल्क प्रसारित किया जाता है।

इस अवसर पर सभी गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों तथा ग्राम सभा के सदस्यों तथा किसानों ने अपने-अपने क्षेत्रों में किये गये प्राकृतिक संसाधनों के सतत् प्रबन्धन तथा जड़ी बूटियों के उत्पादन के बारे में बताया। कुछ संगठनों द्वारा समाज में चलाई जा रही कुटीर उद्योगो एवं योजनाओं के बारे में भी जानकारी दी गई।

कार्यशाला के समापन समारोह के अवसर पर श्रीमती जयश्री आरडे, प्रमुख विस्तार प्रभाग, डा0 एन.एस.के.हर्ष, प्रमुख वन व्याधि प्रभाग, डा. ए.के. रैना, प्रमुख, वन मृदा एवम् भूमि सुधार प्रभाग, डा. वाई, सी. त्रिपाठी, प्रमुख रसायन प्रभाग तथा डा. संजय नैथानी, प्रमुख सेल्यूलॉज एवम् पेपर प्रभाग ने भी अपने विचार व्यक्त किये। इस मौके पर संस्थान के वैज्ञानिक व अधिकारीगण भी उपस्थित थे।

03-04 अगस्त 2012